प्रकृत गुरु

श्रील भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी ठाकुर की १२६वीं व्यासपूजा के उपलक्ष्य में।

वर्त्तमान समय में 'गुरु' शब्द एक फैशन बन गया है। हम देख सकते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों के कई लोग स्वयं को गुरु कहलाने का प्रयत्न करते हैं। जैसे सिनेमा के क्षेत्र में, लोग कुछ प्रसिद्ध कलाकारों को गुरु कहते हैं। खेल जगत्

में एक अच्छे खिलाड़ी को भी गुरु कहा जाता है। राजनीति के क्षेत्र में भी लोग इस शब्द का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार शैक्षिक जगत् में भी 'गुरु' शब्द का प्रयोग होता है। आजकल अध्यात्म के क्षेत्र में भी जो लोक-प्रसिद्ध हो जाते हैं वे भी स्वयं को सेलिब्रिटी गुरु के रूप में मनवाने के लिये लालायित हैं। किन्तु, 'गुरु' का अर्थ होता है गम्भीर; हिमालय पर्वत से भी गम्भीर। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् ही गुरु हैं। जो व्यक्ति श्रीकृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पित होकर जन-सामान्य की श्रीकृष्ण से प्रेममयी सम्बन्ध बनाने में सहायता करता है, वह ही है प्रकृत (वास्तव) गुरु।

गुरु विभिन्न प्रकार के होते हैं, यथा:

- वर्त्म-प्रदर्शक-गुरु अर्थात् जो व्यक्ति भगवान् तक पहुँचने का रास्ता दिखा रहा है,
- शिक्षा गुरु अर्थात् जो व्यक्ति यह शिक्षा दे रहा है कि श्रीकृष्ण की सेवा में कैसे स्वयं को लगायें,
- दीक्षा गुरु अर्थात् जो हमें गोपनीय मन्त्रों में दीक्षा दे रहा है,
- अध्यात्म के क्षेत्र में एक और गुरु होते हैं — चैत्यगुरु। वे श्रीकृष्ण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सदैव हमारे साथ हैं और हमारे समस्त कर्मों के साक्षी हैं किन्तु हमारी स्वतन्त्र-इच्छा में कभी भी बाधा नहीं डालते हैं।

जब एक व्यक्ति के पास पर्याप्त भक्ति-उन्मुखी-सुकृति इकट्ठी हो जाती हैं तब वह शुद्ध भक्तों का सङ्ग पाता है और अध्यात्म (भक्ति) के प्रति उन्मुख होता है। उस समय चैत्यगुरु [हृदय में] यह प्रकाशित करते हैं कि उस व्यक्ति का महान्त-गुरु कौन होगा जो उसे साक्षात् दीक्षा देगा, प्रोत्साहित करेगा और यह शिक्षा देगा कि श्रीकृष्ण और उनकी ह्लादिनी शक्ति, श्रीमती राधारानी, से कैसे जुड़ें। श्रीश्री राधाकृष्ण और श्रीगुरु हमारे आराध्य हैं। इस दुःखमय भौतिक संसार में भौतिक शक्ति के प्रभाव के कारण अधिकतर लोग जन-सामान्य को 'गुरु' तत्त्व के बारे में विपथ कर रहे हैं।

सत्शास्त्र के अनुसार गुरु भगवान् के समान ही हैं किन्तु लोग इस परिभाषा का दुरुपयोग कर

रहे हैं। वर्त्तमान समाज में गुरु का हर प्रकार से सम्मान होता है। कई अवसरवादी इसका लाभ उठा रहे हैं और गुरु होने का ढोंग कर रहे हैं। कई कोमल-हृदय जन ऐसे गुरुओं पर समर्पित हैं और अपने सामर्थ्यनुसार उनको प्रचुर दान, विलासपूर्ण आवास, फ्लाइट से यात्रा आदि अपनी यथा सेवा-वृत्ति से प्रदान कर रहे हैं। किन्तु ये अवसरवादी गुरु होने का ढोंग कर रहे हैं और इन समर्पित भक्तों का लाभ उठा रहे हैं। वे अपने भौतिक जीवनयापन हेतु गुरु-व्यापार को एक सरल आजीविका के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। वे गुरु होने का स्वांग रच रहे हैं एवं मात्र भौतिक लाभ के लिये लोगों को धोखा दे रहे हैं। प्रकृत गुरु का उद्देश्य होता है लोगों को भौतिक लाभ, पूजा, प्रशंसा, प्रतिष्ठा, नाम, प्रसिद्धि की इच्छाओं से मुक्त होने के

लिये प्रेरित करना। इसके साथ ही, गुरु अपने अनुगामियों एवं अन्य सभी को आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करना सिखाता है। श्रीगौराङ्गदेव ने भौतिक कर्त्तव्यों और आध्यात्मिक साधन के बीच सामञ्जस्य बनाते हुये चलने के लिये कहा है, "यथायोग्य विषय भुञ्ज अनासक्त हइया" अर्थात् हमें अपने बच्चों, माता-पिता, रिश्तेदारों, पड़ोसियों आदि के साथ बिना आसक्त हुये सम्बन्ध बनाये रखना है।

पहले दी गयी व्याख्या के अनुसार, हम यह समझ सके कि श्रीकृष्ण और उनकी ह्लादिनी शक्ति सभी प्रकृत गुरुओं के स्रोत हैं। श्रीकृष्ण और राधारानी युगल रूप में श्रीगौराङ्गदेव के रूप में प्रकट हुये। श्रीगौराङ्ग स्वयं श्रीकृष्ण हैं किन्तु श्रीमती राधारानी के भाव और कान्ति

के सहित। यह गौराङ्ग सम्प्रदाय गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय कहलाता है। यह गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय श्रीकृष्ण से प्रारम्भ हुआ है। क्रमशः गौराङ्ग महाप्रभु की शिक्षाएँ उनके अन्तरङ्ग सङ्गियों से आ रही हैं — षड्गोस्वामी जिनके नाम हैं श्रील रूप गोस्वामी, श्रील सनातन गोस्वामी, श्रील जीव गोस्वामी, श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी, श्रील गोपाल भट्ट गोस्वामी, श्रील रघुनाथ भट्ट गोस्वामी, इसके अतिरिक्त श्रील वृन्दावनदास ठाकुर, श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी, श्रील नरोत्तम ठाकुर, श्रील श्यामानन्द प्रभु, श्रील श्रीनिवास आचार्य, श्रील विश्वनाथ चक्रवर्त्तीपाद, श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभु, श्रील वैष्णवसार्वभौम जगन्नाथ दास बाबाजी महाराज, श्रील सच्चिदानन्द भक्तिविनोद

ठाकुर, श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज, समस्त गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाताचार्य श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर एवं उनके प्रकृत अनुयायी। यह सभी वास्तव गुरु हैं। हमने यह देखा है कि इनके पूरे जीवन में वे कभी भी गन्धमात्र भी जागतिक पहचान, पूजा, प्रशंसा, प्रतिष्ठा, नाम, प्रसिद्धि या अन्य भौतिक इच्छाओं की ओर प्रतिधावित नहीं हुए। वे सभी भगवान् गौराङ्गदेव की शिक्षाओं का पालन करते रहे जिन्होंने कहा था कि पहले आचार करो और फिर प्रचार, "आपनि आचरि धर्म जीवेर शिखाय"। गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाताचार्य, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने श्रीमन्महाप्रभु के प्रेम-धर्म के प्रचार हेतु सोलह अक्षर बत्तीस वर्णात्मक 'हरेकृष्ण महामन्त्र' का

शतकोटि-नामजप-यज्ञ १९०५ से १९१५ में किया था। शतकोटि नाम जपने के लिये एक व्यक्ति को प्रतिदिन एक दशक तक १९२ माला करनी होगी। मेरे परमगुरुदेव कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने इस प्रकार नाम जप किया और फिर श्रीगौराङ्गदेव के प्रचार मिशन को श्रीचैतन्य-मठ के नाम से स्थापित किया, जो कि श्रीगौराङ्गदेव का मूल प्रचार-केन्द्र है। क्रमशः मेरे परमगुरुदेव ने श्रीगौराङ्गदेव का प्रेम-सन्देश प्रचार किया एवं ६४ प्रचार-केन्द्र और मन्दिर स्थापित किये। मैं आप सबको यह पुनः बतलाना चाहता हूँ कि जो भी श्रील प्रभुपाद के पदचिह्नों का वास्तविक आनुगत्य कर रहा है वह जनसामान्य को दुःखमयी

भौतिक परिस्थितियों से परित्राण करने हेतु एक गुरु बनने के योग्य है।

मेरे परमगुरुदेव कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के प्रधान शिष्यों में से एक थे, श्रीगोपीनाथ गौड़ीय मठ (मायापुर एवं अन्य सभी शाखाएँ) के प्रतिष्ठाताचार्य मेरे गुरुदेव कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी ठाकुर। वे वैष्णव समुदाय में श्रीचैतन्य महाप्रभु के शिक्षाष्टक के तृतीय श्लोक के मूर्त्तिमान रूप में जाने जाते हैं:

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुणा।

अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः॥

यह तृतीय श्लोक हमें यह सिखाता है कि यदि हम भगवान् चैतन्य के गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में हैं तो हमें यह गुण अपने व्यवहार में

स्थापित करने होंगे। हमें एक तृण के जैसे विनम्र और विनीत होना होगा, एक पेड़ के जैसे सहिष्णु होना होगा और जागतिक पहचान, प्रशंसा, नाम, प्रसिद्धि और भौतिक इच्छाओं से पूर्णतः मुक्त होना होगा। इसके साथ ही, हमें सभी जीवों के प्रति आदर भाव रखना चाहिये एवं सतत हरेकृष्ण महामन्त्र का जप करना चाहिये।

मैंने देखा है कि मेरे आध्यात्मिक गुरु वास्तव में शिक्षाष्टक के तीसरे श्लोक का मूर्त्त रूप थे। पुराणों ने भी एक वास्तविक गुरु के गुणों और उनके आचरण का वर्णन किया है। (श्रीगौड़ीय कण्ठहार १।१५)

कृपासिन्धुः सुसंपूर्णः सर्व-सत्त्वोपकारकः, निःस्पृहः सर्वतः सिद्धः सर्वविद्याविशारदः

सर्व-संशय-सञ्छेत्ताऽनलसो गुरुराहृतः

जो व्यक्ति करुणा का सागर है, जो हर प्रकार से पूर्ण है, जिसमें सभी उत्तम गुण विद्यमान हैं, जो समस्त जीवों के कल्याण के लिए कार्य करता है, जो वासनाओं से मुक्त है, जो हर दृष्टि से सिद्ध है, जो शास्त्रों में निपुण है, जो कृष्ण-तत्त्व का ज्ञान रखता है, जो अपने शिष्यों के सभी संदेहों को दूर कर सकता है, और जो सदैव कृष्ण की सेवा में सचेत रहता है, वही सच्चा गुरु कहलाता है। (हरिभक्तिविलास १।४५-४६, विष्णु-स्मृति वचन से उद्धृत)

यह प्रमाणित करता है कि एक आध्यात्मिक गुरु को करुणा का सागर होना चाहिए। जिस प्रकार सागर कभी वर्षा की अधिकता या कमी

के आधार पर कभी भेदभाव नहीं करता है। सागर का जल-स्तर सदैव समान रहता है। मैंने भी देखा कि यह उनके लिए कभी महत्वपूर्ण नहीं था कि कोई व्यक्ति उनका शिष्य है या नहीं। यदि कोई भी व्यक्ति उनके पास आध्यात्मिक साधना के उद्देश्य से आता, तो मेरे गुरु उन पर सदैव अपनी कृपा की वर्षा करते थे और उन्हें यह स्वस्ति वचन प्रदान करते थे।

ॐ स्वस्ति नो गोविन्दः स्वस्ति
नोऽच्युतानन्तौ, स्वस्ति नो वासुदेवो
विष्णुर्दधातु

स्वस्ति नो नारायणो नरः वै, स्वस्ति नः
पद्मनाभः पुरुषोत्तमो दधातु

स्वस्ति नो विश्वक्सेनो विश्वेश्वरः, स्वस्ति नो हृषीकेशो हरिर्दधातु

स्वस्ति नो वैनतेयो हरिः, स्वस्ति नोऽञ्जनासुतो हनुर्भागवतो दधातु

स्वस्ति स्वस्ति सुमङ्गलैकशो महान्, श्रीकृष्णसच्चिदानन्दघनः सर्वेश्वरेश्वरः दधातु

करोतु स्वस्ति मे कृष्णः सर्वलोकेश्वरेश्वरः, कार्ष्णादयश्च कुर्वन्तु स्वस्ति मे लोकपावनाः

कृष्णो ममैव सर्वत्र स्वस्ति कुर्यात् श्रिया समम्, तथैव च सदा कार्ष्णिः सर्वविघ्नविनाशनः

ॐ माधवो माधवो वाचि, माधवो माधवो हृदि

स्मरन्ति साधवः सर्वे, सर्वकार्येषु माधवम्

इसके बाद, विभिन्न भौतिक संकटों से सुरक्षा के लिए, वे नृसिंह प्रार्थना का जप करते थे।

श्रीनृसिंह, जय नृसिंह, जय जय नृसिंह

प्रह्लादेश जय पद्मा-मुख-पद्म-भृङ्ग

नमस्ते नरसिंहाय प्रह्लादाह्लाद-दायिने

हिरण्यकशिपोर वक्षःशिला-टङ्क-नखालये

वाग्-ईशा यस्य वदने लक्ष्मीः यस्य च वक्षसि

यस्यान्ते हृदये संवित् तं नरसिंहम् अहं भजे

इतो नरसिंहः परतो नरसिंहो यतो यतो यामि ततः नरसिंहः

बहिर् नरसिंहो हृदये नरसिंहो नरसिंहम् आदिं शरणं प्रपद्ये

ॐ आं ह्रीं क्रों क्ष्रौं च हुं फट्

यह एक अत्यन्त शक्तिशाली बीज मन्त्र है, जो हमें सभी प्रकार के भौतिक सङ्कटों से बचाता है। इसके बाद वे इस प्रकार से पाठ करते थे: |

तप्तहाटकेशाग्र ज्वलत्पावकलोचन
वज्राधिकनखस्पर्श दिव्यसिंह नमोऽस्तु ते |

इसके बाद पञ्चतत्त्व मन्त्र का उच्चारण होता था:

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द श्रीअद्वैत
गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द |

फिर महामन्त्र:

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

यदि कोई महामन्त्र का जप करने और आध्यात्मिक साधना में प्रवृत्त होने की इच्छा लेकर आता, तो मेरे गुरुजी उन पर पवित्र जल छिड़कते और उनकी रक्षा के लिए परम्परा की प्रार्थना करते हुए इन मन्त्रों का पाठ करते और अपना हाथ उनके सिर पर रखते। उन्होंने कभी भी किसी को अपने चरण स्पर्श करने की अनुमति नहीं दी, सिवाय अपने निकटतम सहयोगियों के। वे सदैव अपने कोमल कमल जैसे हाथों को उनके सिर पर रखते और उन पर अपनी कृपा बरसाते। यही मेरे गुरु की विशेषता थी। वे कभी किसी के साथ भेदभाव नहीं करते थे। वे 'कृपा-सिन्धु' थे, अर्थात् करुणा के सागर। जिस प्रकार सागर सभी नदियों को अपने में समाहित कर लेता है, उसी प्रकार वे सबका स्वागत करते थे। सागर

कभी अहङ्कारी नहीं होता; उसमें कितना भी पानी आ जाए या चला जाए, उसका जल-स्तर कभी प्रभावित नहीं होता। मेरे गुरु का स्वभाव भी सागर के समान था। वे कभी किसी के आने-जाने से प्रभावित नहीं होते थे। वे सदैव अपने आराध्य भगवान श्री राधा-कृष्ण की सेवा में लीन रहते थे।

जिन्होंने भी उनकी कृपा प्राप्त की, उन्हें इस जीवन या अगले जीवन में भक्ति का मार्ग अवश्य प्राप्त होगा। वे सभी पर 'सु-सम्पूर्णः' कृपा करते थे। 'सर्व-सत्त्वोपकारकः' — यदि कोई भी व्यक्ति भौतिक समस्याओं के साथ आता, तो वे समाधान प्रदान करते और वह समाधान हरे कृष्ण महामन्त्र होता। 'निःस्पृहः' — उनके भीतर कोई भौतिक आसक्ति नहीं

थी। 'सर्वतः सिद्धः' — जो कोई भी हृदय से हरिनाम को स्वीकार करता है, उसने सभी सिद्धियों को प्राप्त कर लिया है, क्योंकि कृष्ण सभी सिद्धियों के स्वरूप हैं और हरिनाम कृष्ण से भिन्न नहीं है। इसलिए वे सदैव हरे कृष्ण महामन्त्र का जप करते रहते थे और 'सर्वतः सिद्धः' के मूर्त्त रूप बन गए थे। वे जहाँ भी रहते, महामन्त्र का जप करते और अपने साथ सभी प्रमाणित शास्त्र रखते। वे सदैव शास्त्रों से सन्दर्भ प्रदान करते, इसलिए वे 'सर्व-विद्या-विशारदः' थे। 'सर्व-संशय-सञ्छेत्ता' — वे हमारे सभी सन्देहों को नष्ट कर देते और हमारे हृदय में भक्ति की स्थापना करते। भक्ति ही भगवान् के चरणों तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है, और वही सभी जीवों का शाश्वत आनन्दमय और शान्तिपूर्ण प्रेममय गृह है। वे

हमें सदैव हरे कृष्ण महामन्त्र का जप करने के लिए प्रेरित करते थे।

हमें हरे कृष्ण महामन्त्र के जप के मार्ग में आने वाली विभिन्न बाधाओं से बचाने के लिए, वे सदैव हमें नृसिंह प्रार्थना का जप करने के लिए प्रेरित करते थे, क्योंकि नृसिंहदेव हमें भक्ति की बाधाओं से बचाते हैं। वे हमारी भक्ति की रक्षा करते हैं। मेरे गुरुजी हमें हरे कृष्ण महामन्त्र के पहले नृसिंह प्रार्थना का जप करने के लिए कहते थे, ताकि हमें कृष्ण की सेवा प्राप्त हो सके (प्रेम या शुद्ध कृष्ण-प्रेम), जो हरे कृष्ण महामन्त्र के जप का लक्ष्य है।

अनलसो गुरुर् आहृतः — उन्होंने कभी अपने शरीर को विश्राम करने की अनुमति नहीं दी। यह समझना बहुत कठिन था कि वे कब सोने

जाते थे और कब उठते थे। मैं उनका निकटतम सेवक था और उनके शारीरिक सेवा और सचिवीय कार्य देखता था। मैं तब तक प्रतीक्षा करता जब तक वे विश्राम नहीं करते थे। मैं पढ़ाई और जप करता रहता था। मुझे सुबह जल्दी उठना पड़ता था, इसलिए मैं उनके बिस्तर के सामने दरवाजे की चटाई पर अपना सिर रखकर सोता था। जब वे लेखन समाप्त कर लेते, तो वे स्वाभाविक क्रियाओं के लिए जाते थे। जब वे उठते, तो उन्हें मुझे बुलाना पड़ता था, क्योंकि उन्हें अपने बिस्तर से किताबों को हटाने में मदद की आवश्यकता होती थी, जिससे कि वे लेट सकें। इस प्रकार मैंने देखा कि वे लगभग रात के १२-१२:३० बजे बिस्तर पर जाते थे। जब मैं सुबह ४ बजे उठता, तो देखता कि वे पहले से ही जाग चुके

होते थे और अपनी जपमाला पर ध्यानपूर्वक जप कर रहे होते थे। इसलिए, हम यह नहीं कह सकते कि उन्होंने कभी अपने शरीर को आराम करने दिया। वे निरन्तर सक्रिय रहते थे। यदि कोई आध्यात्मिक गुरु या गुरु बनना चाहता है, तो उसे ऐसे गुण रखने चाहिए; 'अनलसो गुरुर् आहृतः'।

मैंने अपने गुरुजी को इन गुणों से सम्पन्न देखा।

आज मैं अपने गुरु से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ — कृपया मुझ पर अपनी कृपा बरसायें ताकि मैं आपका सच्चा शिष्य बन सकूँ। शिष्य का अर्थ है वह व्यक्ति जो अपने आध्यात्मिक गुरु के सभी सिद्धान्तों को स्वीकार करता है। जो उनका पालन करता है, वही उस गुरु का सच्चा शिष्य कहलाने का अधिकारी है। मेरे गुरु एक अद्भुत व्यक्तित्व थे। हमने भी देखा कि उनका श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर पर कितना दृढ़ विश्वास था। जब भी कोई आकर श्रील प्रभुपाद के बारे में कुछ प्रतिकूल कहता या भागवत परम्परा को स्वीकार नहीं करता, तो वे कहते थे, 'श्रील प्रभुपाद श्रीमती राधारानी के अत्यन्त प्रिय हैं। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि मैं श्रील प्रभुपाद का शिष्य हूँ, और मेरे

प्रभुपाद श्रीमती राधारानी के अत्यन्त प्रिय हैं, जो वास्तविक आचार्य हैं।' यदि आपको हमारी गौड़ीय वैष्णव परम्परा पर कोई सन्देह है, तो आपको यह जानना चाहिये कि मैं अपने गुरु श्रील प्रभुपाद को एक मान्य परम्परा के रूप में स्वीकार करता हूँ। वे कहते थे, 'श्रील प्रभुपाद ने जो भी व्यवस्था बनाई है, वह सही भागवत परम्परा है।' इस प्रकार उनका विश्वास अटल था। मेरे गुरुजी को श्रील प्रभुपाद ने दैनिक समाचार पत्र 'दैनिक नदिया प्रकाश' का सम्पादक नियुक्त किया था। श्रील प्रभुपाद उन्हें अपने लिए त्वरित नोट्स लेने के लिए भी साथ रखते थे।

१९९४ में एक दिन, मेरे गुरु को निमोनिया हो गया। जब वे थोड़े बेहतर महसूस कर रहे थे,

तो उन्होंने एक लेख लिखने प्रयत्न किया। लिखने के बाद वे अपनी ही लिखावट को पढ़ नहीं पा रहे थे। वे एक ही समय में रो भी रहे थे और मुस्कुरा भी रहे थे। वे इसलिए रो रहे थे कि वे श्रील प्रभुपाद द्वारा दी गई सेवा को पूरा नहीं कर पा रहे थे और इसलिए मुस्कुरा रहे थे कि उनका शरीर बूढ़ा हो गया है और उनके हाथ काँप रहे हैं। अब, प्रभुपाद उन्हें कभी भी अपने धाम ले जा सकते हैं। यह देखकर मैंने उनसे पूछा कि अगर वे अनुमति दें, तो वे मुझे लिखवा सकते हैं और मैं उनकी ओर से लिख सकता हूँ, भले ही मुझसे कई गलतियाँ हो जाएँ। गुरुदेव ने उत्तर दिया, 'मेरे प्रभुपाद ने मुझे लेखन सेवा दी है, न कि त्वरित-लिखाई सेवा। इसके अलावा, तुम्हारे पास बहुत सारी दायित्व हैं, मन्दिर का प्रबन्धन, मेरे लिए

भोजन बनाना और पूजा करना। मेरे लिए यह भी सम्भव नहीं है कि मैं त्वरित-लिखाई करवाऊँ। यदि मैंने ऐसा किया, तो मैं श्रील प्रभुपाद के निर्देशों की अवहेलना करूँगा।' मेरे गुरुदेव का अपने गुरुदेव श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर पर ऐसा दृढ़ विश्वास था।

आज मैं विनम्रतापूर्वक याचनापूर्ण प्रार्थना करता हूँ, 'हे मेरे गुरु महाराज, कृपया मुझ पर ऐसी कृपा करें कि मुझे भी आप और पूरी गौड़ीय वैष्णव परम्परा पर ऐसा दृढ़ विश्वास हो सके। उनकी कृपा मुझे इस दुःखमय संसार से मुक्त होने की शक्ति देगी। फिर मुझे श्रीश्री राधाकृष्ण के दिव्य युगल चरणों के अधीन सदा के लिए रहने की अनुमति दें, जो सभी

जीवों के लिए आनन्दमय और शान्तिपूर्ण प्रेममय धाम है। कृपया मुझे उस स्थान तक पहुँचने की अनुमति दें।'

इस शुभ दिन पर, मैं श्रील नारोत्तम दास ठाकुर द्वारा कही गई एक बात को भी याद कर रहा हूँ,

श्रीगुरु करुणासिन्धु, अधम जनार बन्धु,
लोकनाथ लोकेर जीवन

श्री गुरुदेव की कृपा करुणा का सागर है, और वे सभी पतित जीवों के मित्र हैं, क्योंकि गुरु का अर्थ है वह जो अज्ञान में पड़े जीव को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। अन्धकार माया है और प्रकाश भगवान् हैं — जो कि सूर्य के समान हैं। अहैतुकी करुणावश गुरुदेव सदैव मेरे जैसे पतित जीवों की

सहायता करते हैं। लेकिन गुरु सच्चा होने चाहिये। आजकल, गुरु बनना बिना पूँजी का एक अच्छा व्यवसाय बन गया है। कई अवसरवादी इस परिस्थिति का लाभ उठाते हैं, लेकिन मेरे गुरु, मेरे परमगुरु और मेरे गुरुवर्ग जैसे कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिगौरव वैखानस गोस्वामी महाराज, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिरक्षक श्रीधरदेव गोस्वामी महाराज, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी गोस्वामी महाराज (जिन्हें आजकल श्रील प्रभुपाद के नाम से जाना जाता है), कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिकुमुद सन्त गोस्वामी महाराज, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील

भक्तिहृदय वन गोस्वामी महाराज, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिवैभव पुरी गोस्वामी महाराज, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिकुसुम श्रमण गोस्वामी महाराज, कृष्णकृपामूर्त्ति श्रील भक्तिविलास तीर्थ गोस्वामी महाराज के साथ-साथ मेरे परमगुरु के शिष्य सभी वास्तव गुरु हैं। ये सभी करुणा के महासागर हैं और सभी हमारा उद्धार करने की क्षमता रखते हैं।

इस चर्चा के अनुसार, वास्तव गुरु श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर हैं। उन्होंने हमें धर्म की परिभाषा दी, जिसे उन्होंने आत्मा का शाश्वत कार्य और स्वभाव बताया। यही धर्म है। हमारी पहचान यह है कि हम आत्मा हैं। आत्मा का शाश्वत कार्य हमेशा आनन्दमय, शान्तिपूर्ण और

प्रेमपूर्ण होना है। इसलिये, धर्म की परिभाषा के अनुसार, हमें अपनी आत्मा को भोजन देना चाहिये। हमारी आत्मा का भोजन क्या है? आत्मा आध्यात्मिक है, इसलिए भोजन भी आध्यात्मिक होना चाहिये। यही कारण है कि श्रील प्रभुपाद ने गौड़ीय मठ की स्थापना की, जिससे लोग आत्मा को समझ सकें और उसे भोजन दे सकें।

एक बार, श्रील प्रभुपाद मन्दिर में थे, और एक विद्वान आकर श्रील प्रभुपाद का महिमा-मण्डन करने लगे। उन्होंने कहा, 'श्रील प्रभुपाद, आपके शिष्य वैष्णव धर्म का प्रचार गाँव-गाँव कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जल्द ही आप प्रत्येक गाँव में गौड़ीय मठ स्थापित कर सकेंगे।' श्रील प्रभुपाद इस टिप्पणी से प्रसन्न

नहीं हुये। प्रभुपाद ने कहा, 'आप मेरे मिशन को कम करके आँक रहे हैं। मेरा मिशन प्रत्येक गाँव में गौड़ीय मठ स्थापित करना नहीं है। मेरा उद्देश्य भगवान् चैतन्य के मिशन को प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में स्थापित करना है। तभी भगवान् चैतन्य का मिशन प्रत्येक स्थान पर प्रसारित होगा।'

जो भी आध्यात्मिकता का अभ्यास करता है, उसे पूरी तरह आनन्दित होना चाहिये, क्योंकि वे अपनी आत्मा को भोजन दे रहे होते हैं। जो भी लोग धर्म के नाम पर किसी विचारधारा का पालन करते हैं, वह उनकी विचारधारा हो सकती है, लेकिन उसे धर्म नहीं माना जा सकता। यदि लोग विभिन्न विचारधाराओं का पालन करते हैं, तो वे कभी भी शाश्वत रूप से

सन्तुष्ट नहीं होंगे। लोग जागतिक पहचान, प्रशंसा, नाम, प्रसिद्धि और इच्छाओं के पीछे भागते रहेंगे, और अपनी साधना को सन्तुलित करने का प्रयास करते रहेंगे। इसलिए श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर ने हमें सिखाया कि धर्म वह है जो आत्मा को भोजन प्रदान करता है, और वह भोजन हरे कृष्ण महामन्त्र का जप है। जब हम बिना झगड़े, बिना जागतिक पहचान, प्रशंसा, नाम, प्रसिद्धि और अन्य इच्छाओं के जप करते हैं, तब वह भोजन हमारी आत्मा को पोषण देता है। अन्यथा, यह जागतिक पहचान, प्रशंसा, नाम, प्रसिद्धि और अन्य इच्छाओं की खर-पतवार को बढ़ाता है। हमारे महान आचार्य श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने कहा है —

काहारे ना करे निन्दा, 'कृष्ण कृष्ण' बले अजेय
चैतन्य सेइ जिनिबेक हेले |

यदि आप वास्तव में भगवान चैतन्य के वास्तव मिशन को समझना चाहते हैं, तो हमें विवादास्पद व्यवहार या निन्दा में उलझना नहीं चाहिये। हम इस जागतिक पहचान, प्रशंसा, नाम, प्रसिद्धि, और भिन्न इच्छाओं में जितने उलझे रहते हैं, उतनी ही निन्दा में फँसते जाते हैं। यदि हम किसी ऐसे व्यक्ति के साथ हैं, जिसे निन्दा की हानिकारकता के बारे में समझाया नहीं जा सकता, तो बेहतर होगा कि हम उस स्थान को 'कृष्ण, कृष्ण' का जप करते हुये छोड़ दें। भगवान् चैतन्य के असली मिशन को समझने के लिये, श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर के

सच्चे अनुयायी ही हमारे सच्चे गुरु हैं। वास्तव गुरु कृष्ण हैं और वह जो वर्त्तमान काल में कृष्ण का प्रतिनिधित्व करता है। वे कभी भी विवादों में नहीं उलझे हैं और उन्होंने कभी भी भौतिक मान्यता की इच्छा नहीं की है। उन्होंने केवल लोगों को आत्मा का पोषण करने की प्रेरणा दी है। आत्मा का पोषण करना ही सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है। केवल भौतिक आवश्यकताएँ कभी पूरी नहीं होतीं।

मैं इस शुभ दिवस अश्विन शुक्ल चतुर्थी पर, जो वैदिक महीने अश्विन में चन्द्रमा के बढ़ते चरण का चौथा दिन है, दुर्गा पूजा से तीन दिन पहले, विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ, जिस दिन मेरे गुरु महाराज ने चक्रवर्ती परिवार में

माता रामरङ्गिनी देवी और पिता तारिणी चरण चक्रवर्ती से जन्म लिया था। इस शुभ दिन पर, मैं विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ, कृपया इस पतित (अधम) जीव पर, जो केवल आपका शिष्य होने का ढोंग करता है, अपनी कृपा बरसायें। मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे अपनी कृपा से सच्चा शिष्य बनायें और मुझे इस दुःखमय संसार से मुक्ति दिलायें और मुझे गोलोक वृन्दावन में दिव्य युगल की सेवा करने की अनुमति दें, जो सभी जीवों के लिए आनन्दमय और शान्तिपूर्ण प्रेममय धाम है।

कृपया मुझे गुरु, वैष्णव और भगवान् के चरणों में एक छोटे से धूलकण के रूप में बनाये रखें।

श्रीभक्तिबिबुध बोधायन